संपादक के नोट

मैं तुम सबका अभिवादन करती हूँ मेरे प्रभु और उद्धारकरता येशु के अवर्णनीय नाम से। अति प्रियों, मैं विश्वास रखती हूँ कि नासरत के येशु ने आप सबको उत्तम आरोग्य और शांति में रखा है।

भजन संहिता १२१:७ कहता है – यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।

पवित्र शास्त्र के ज़रिए प्रभु ने हमे बार–बार वादा दिया है कि वह हमारा रक्षक है।

आज भी जो भी परिस्थिति में तुम हो, प्रभु तुम्हे सुरक्षित रखेगा। कभी–कभी हमारे जीवनों में हमे महत्त्वपूर्ण निर्णय को लेना पड़ता है। हम जानते हैं कि ये निर्णय हमारे भविष्य को फ़ैसला करती है। फिर भी हम हमारे निर्णय को मानने में ड़रते हैं। हम नहीं जानते कि दाया मुड़ना है या बाया। उस समय हमे प्रभु को धीरे से पुकारना चाहिए और कहना है कि मैंने मेरे निर्णय को तेरे हाथों में दिया है, तू मेरे लिए निर्णय ले।"

जब हम इस प्रकार प्रार्थना करते हैं, वह उसके नज़रों में जो ठीक नहीं है उसे निकाल देगा, वह तुम्हारे लिए एक नया मार्ग खोलेगा।

स्मरण करना राजा दाऊद के वचनों को और परमेश्वर कि स्तुति करो।

मैं अपनी आँखें पर्वतों कि ओर उठाऊंगा; मुझे सहयता कहाँ से मिलेगी? सहायता तो मुझे यहोवा की ओर से मिलती है, जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है। वह तेरे पैर को फिसलने न देगा; तेरा रक्षक नही ऊंघेगा। देख इस्राएल का रक्षक न तो ऊंघेगा, न सोएगा। यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरी दाहिनी ओर तेरी आड़ है। न तो दिन को सूर्य, न रात को चन्द्रमा तुझे कुछ हानि पहुंचाएगा। यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा। यहोवा तेरे आने–जाने में तेरी रक्षा अब से सदा तक करता रहेगा।

तुम अपने–आप को प्रभु के हाथों में सौंप दो और देखो कि वह तुम्हे कैसे बचाता है।

तुम प्रेरित पौलुस के संग होकर आनंद से यह भी कह सकते हो कि २ तीमुथियुस १:२ – मेरे प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नामः पिता परमेश्वर और हमारे प्रभु मसीह येशु की ओर से तुझे अनुग्रह, दया और शानति मिले।

प्रभु ने यहोशू को वचन दिया है कि वह उसे कभी असफल नहीं करेगा, न ही उसे त्यागेगा। यहोशू १:५ – तेरे जीवन भर कोई भी मनुष्य तेरे सामने ठहर नहीं सकेगा। जिस प्रकार मैं मूसा के साथ रहा उसी प्रकार तेरे साथ भी रहूंगा। न तो मैं तुझे धोखा दूंगा और न त्यागूंगा।

प्रभु ने याकूब से बात किया कि वह उसे नहीं छोड़ेगा, तब तक कि वह न करे जो उसने याकूब से कहा कि वह करेगा।

उत्पत्ति २८:१५ – और सुन, मैं तेरे साथ हूं, और जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरी रक्षा करूंगा, और तुझे इस देश में लौटा ले

आऊंगा, क्योंकि जो प्रतिज्ञा मैंने तुझ से की है, जब तक उसे पूरी न कर लूं, तब तक तुझे नहीं छोडूंगा।"

प्रभु का वचन तुम सबको यह है कि वह तुम्हे बचाए रखेगा। इस लिए आनंद से प्रभु की स्तुति करो। भजन संहिता ४६:१ – परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट के समय तत्पर सहायक।

येशु ने लूका १२:७ में कहा – वास्तव में तुम्हारे सिर के सारे बाल भी गिने हुए हैं। मत डरो। तुम बहुत–सी गौरैय्यों से भी बढ़कर मूल्यवान हो।

इसलिए अपनी समस्त चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि वह तुम्हारी चिन्ता करता है। अति–प्रियों, अपने जीवनों को येशु के साथ बिताने को सीखो क्योंकि येशु ने कहा यूहन्ना १५:५ – मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

अगर हम प्रभु येशु में एक हैं, हम उसके संग आत्मा में भी एक होंगे। यूहन्ना १७:२२ – और वह महिमा जो तू ने मुझे दी है उन्हें दी है, कि वे वैसे ही एक हों जैसे हम एक हैं। सोचो, कितने सुंदर रीति से प्रभु हमे आशिषित कर रहा है।

वह देता है "तेरी शहरपनाह के भीतर शांति, और तेरे महलों में सुख–समृद्धि बनी रहे!"

जब हम एक घर जाते है, अभिवादन करों।

यदि वह घर योग्य हो तो तुम्हारी शांति उस पर बनी रहेगी, परन्तु यदि न हो तो शांति का तुम्हारा अभिवादन तुम्हारे पास लौट आएगा

बहुत से घरों में पैसों कि कमी होती है और इस कारण घर की शांति निकल जाती है। इस परिस्थिति को बदलने के लिए, यशायाह २६:३ – जिसका मन तुझ में लगा है, उसकी शांति तेरे द्वारा पूरी बनी रहेगी, क्योंकि उसका भरोसा तुझ पर है।

आज जो भी तुम्हारी परिस्थिति हो; तुम्हारा मन प्रभु येशु पर होना चाहिए।

शांति का राजा को तुम्हारे घर में लाओ। यूहन्ना १४:२७ – मैं तुम्हें शांति दिए जाता हूँ; अपनी शांति तुम्हें देता हूँ; ऐसे नहीं देता जैसे संसार तुम्हें देता है। तुम्हारा मन व्याकुल न हो; और न भयभीत हो।

पवित्र–शास्त्र कहता है भजन संहिता १४७: १४ – वह तेरी सीमाओं में शांति बनाए रखता है; वह तुझे उत्तम से उत्तम गेहूँ से तृप्त करता है।

तुम्हे यह सोचना चाहिए कि यह वचन तुम्हे सीधे ही प्रभु से आया है। वह तुम्हारे जीवन में चमत्कार करेगा। १ इतिहास १२:१८ – तब तीसों के प्रधान अर्थात अमासै में पवित्र आत्मा समा गया और उसने कहा: "हे दाऊद, हम तेरे हैं! हे यिशै के पुत्र, हम तेरे साथ हैं! कुशल, हां तेरा कुशल हो; और तेरे सहायकों का कुशल हो, क्योंकि तेरा परमेश्वर ही तेरी सहायता किया करता है!" तब दाऊद ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हें टुकड़ियों के प्रधान बनाये।

दाऊद ने प्रभु से बहुत–से आशिषों को पाया जब उसने उसके आँखों को उसपर लगाया वही दाऊद इसाएल का राजा बनने के बाद भी उसके आँखों को पभु पर रखता था, कहते हुए, हे स्वर्ग में विराजमान, मैं अपनी आंखे तेरी ओर उठाता हूं।

हमारे जीवनों में भी हमे अपने आंखों को प्रभु की ओर रखना है और हमारे पैरों को मंदिर के तरफ़।

स्तुति के गीतों को हमेशा हमारे हृदय और होटों पर रखना है।

वह तेरे पैर को फिसलने न देगा; तेरा रक्षक नही ऊंघेगा।
देख इस्राएल का रक्षक न तो ऊंघेगा, न सोएगा।
देश देश के लोग तेरे प्रकाश की ओर तथा राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे।

प्रभु इन सारे वादाओं को तुम्हारे जीवनों में पूरा करे जब तक कि हम अगले महिने फिर मिलें।

––पास्टर सरोजा म.

परमेश्वर जो हमारी ज़रूरतों को पूरा करता ह।

फिलिप्पियों ४:१९ – मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह येशु में है तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा। यह वचन में कहता है कि परमेश्वर हमारी सारी ज़रूरतों को पूरा करेगा येशु मसीह के द्वारा। इसलिए हमारी जीवनों कि ज़रूरतों और कमीपन को पूरा करने के लिए यह बहुत ही ज़रूरी है कि हम परमेश्वर और प्रभु येशु मसीह पर विश्वास करें। एक कहानी है – एक मनुष्य था जिसकी नाक बहुत लंबी थी। उसके नाक के कारण उसका चहरा बहुत विचित्र लगता था इसलिए वह बहुत दुखी था। एक दिन जब वह अत्यंत दुखी हुआ उसके नाक के कारण, वह एक बगीचे में जाकर अकेले बैठ गया। बगीचे में उसे एक मधुर आवाज़ सुनाई दी लोगों की जो परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे। जैसे ही वह स्तुति की आवाज़ सुन रहा था उसके टूटे हृदय को शांति प्राप्त हुई। वह उठा और उस आवाज़ की ओर धीरे चलने लगा। जब वह उस जगह पहुँचा उसने उस छोटीसी लड़की को बैठकर गाते हुए सुना। वह मनुष्य गया और उस लड़की को बैठकर गाते हुए सुना। यह मनुष्य गया और उस लड़की से कहा "तुम कितनी खुश हो, तुम्हारी आवाज़ कितनी सुंदर है, लेकिन मैं एक दुखी मनुष्य हूँ। मैं इस गाँव में नहीं रहना चाहता हूँ क्योंकि मेरी नाक बहुत लंबी है। मेरा हृदय टूटा हुआ है, और इसी कारण मैं इस वाटिका में आया, पर आप की मधुर आवाज़ सुनकर मेरे हृदय में आनंद है।" वह लड़की मुस्कुराई और उसके चश्मे को निकाला और वह मनुष्य यह देखकर आश्चर्य–चकित हुआ कि उसके दोनों आँखें नहीं थी, फिर उसने उसका उपकेश निकाला और उसके सर पर बाल नहीं थे। तब उसने उससे कहा "तुम्हारा तो केवल नाक लंबा है लेकिन मेरे लिए सब कुछ अंधकार है, लेकिन फिर भी मेरे परमेश्वर के नाम से और उसपर विश्वास रखते हुए मैं आज भी खुशी से जी रही हूँ। आज भी हमारे जीवन में जो भी हमारी ज़रूरतें हों और कमीपन हों, वचन कहता है कि परमेश्वर उसे पूरा करेगा येशु मसीह के नाम से। हमे प्रभु पर विश्वास करना चाहिए और उसके वचन को भी, और हमारे जीवनों में आनंद होना चाहिए। जब हमारा विश्वास प्रभु पर होता है और उसके वचन को हम ग्रहण करते हैं तब हमारे हृदयों में आनंद होगा। प्रभु पर विश्वास के बिना और उसके वचन के बिना हम उस लंबे नाक वाले मनुष्य के जैसे बनते हैं और हमारे जीवन में सदा दुख रहेगा और हम में टूटा मन रहेगा। हमारे परिवार में अंधकार रहेगा। जब हम अपने पिता परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और प्रभु येशु मसीह पर तब पिता हमारी सारी ज़रूरतों को और कमीपन को जो हमारे जीवन में है उसके पुत्र, प्रभु येशु मसीह के नाम से पूरा करेगा।

पवित्र शास्त्र में हम पढ़ते हैं कि प्रभु बहुतों के ज़रूरतों को पूरा किया है। जब प्रभु शादी में गया, दाख रस कम पड़ गया और प्रभु ने उस ज़रूरत को पूरा किया। एक स्त्री जिसने पाँच आदमियों से शादी की उसने भी कमीपन महसूस किया और परमेश्वर ने उसे जीवित जल देकर उसके कमीपन को पूरा किया। ३८ साल से एक आदमी जिसे बैतहसदा कुण्ड के बाजू में लिटाया गया था। प्रभु ने जाकर उसे चंगा किया और

उसे चलाया। प्रभु हमे आनंद देगा, शांति और समाधान हर वस्तु में देगा। जैसे हम पवित्र शास्त्र के हर वचन को पढ़ते हैं, हमारे जीवनों में विश्वास आना ज़रूरी हैं। वचन केवल पौरानिक दिनों के लिए नहीं हैं। आज भी उसका वचन जीवित है। जैसे हम पढ़ते हैं परमेश्वर के वचन को और वचन पर विश्वास करते हैं हमारे हृदयों में, तब हम इस प्रभु के इस आनंद को हमारे घरों में और हमारे जीवनों में प्राप्त करते हैं, प्रभु येशु मसीह के नाम से हमारे जीवनों में हमे दाऊद जैसे विश्वास होना चाहिए। हम देखते हैं कि दाऊद में महान विश्वास था। हम देखते हैं **१** शमूएल **१७:३७** में – फिर दाऊद ने कहा, "यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू के पंजों से बचाया वही इस पलिश्ती के हाथ से मुझे बचाएगा। तब शाऊल ने दाऊद से कहा, जा, यहोवा तेरे साथ रहे।" दाऊद ने स्मरण किया कि कैसे प्रभु ने उसे कठिन स्थितियों से बचाया उसके जीवन में। दुख के समय और हमारे जीवन में कठिनाइयों के समय जब हम पौरानिक समयों के सेवा के कार्यों को पढ़ते हैं, तब हमारे जीवनों में महान विश्वास आता है। हम पढ़ते हैं भजन संहिता **३७:३१** में – उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में बनी रहती है, उसके कदम फिसलते नहीं।

दाऊद ने प्रभु के साक्षियों को उसके हृदय में रखा और वही कारण था कि उसमें धैर्य था गोलियत का सामना करने के लिए। जैसे उसने अद्‌भुत कार्यों का स्मरण किया जिसे प्रभु ने उसके जीवन में किया, उसके हृदय में एक ठोस विश्वास था कि वह ज़रूर गोलियत को हराकर खतम कर सकता है। जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते है और इन घटनाओं और चमत्कारों को अपने हृदय में स्मरण करते हैं तब हम कमज़ोर नहीं होंगे लेकिन हम धैर्यवान होंगे। हम में धैर्य होगा किसी भी दूख कठिनाई या दुष्मन का सामना करने के लिए। जैसे ही तुम परमेश्वर का वचन पढ़ते हो वचन तुम्हे मज़बूत खड़ा करेगा और हमारे कदम नहीं फिसलेंगे। दाऊद ने परमेश्वर के हर वचन को उसके हृदय में रखा और इसी कारण उसका पैर नही फ़िसला। आज, हमे धैर्य से खड़े रहने के लिए और हमारे पाव न फिसलने के लिए, हमारे जीवनों और हृदयों में परमेश्वर का वचन होना चाहिए। तब हम हमारे जीवन के हर परिस्थिति में विजयी हो सकते हैं। हमे परमेश्वर के ओर कृतज्ञ भरा होना चाहिए क्योंकि वह हमे बचाता है, हमे चंगा करता है, और उन सब चीज़ो के लिए जो उसने हमारे लिए किया है। जब हम प्रभु को धन्यवाद देते रहते हैं तब प्रभु का आनंद और उन वरदानों जिसे उसने हमे दिया है, हमेशा हमारे साथ रहेगा। अगर हमारे जीवनों में कुछ भी घटी है तो हमे प्रभु से पूछना है और प्रभु हमे हमारे जीवन में सब चीज़ो को देगा। हम देखते है याकूब **१:५** में – यदि तुम में से किसी को बुद्धि की कमी हो तो वह परमेश्वर से मांगे और उसे दी जाएगी, क्योंकि वह प्रत्येक को बिना उलाहना दिए उदारता से देता है।

जैसे कि वचन कहता है फिलिप्पियों **४:१९** में, अगर हमे कुछ भी चीज़ की ज़रूरत है और हम पिता से माँगते हैं वह हमे उसके पुत्र, येशु मसीह के नाम से दिया जाएगा। हमारे जीवनों में हमारी ज़रूरतें बहुत हो सकतीं हैं। हमे पैसों, आरोग्य, खाना, कपड़ा की घटी हो सकती है, और जैसे कि यह वचन कहता है हमे बुद्धि कि भी घटी हो सकती है। हमे यह बुद्धि केवल प्रभु से मिल सकती है। वचन के अनुसार अगर हम पिता से पूछते हैं तो वह हमारी ज़रूरत को पूरा करेगा उसके पुत्र येशु के नाम से। जब हम प्रभु से हमारी ज़रूरतों के बारे में पूछते हैं, चाहे जो कुछ भी हो, पैसों, आरोग्य, खाना, कपड़ा या बुद्धि, प्रभु हमे सब देने के लिए तैयार है।

हम देखते है कि सुलैमान परमेश्वर से बुद्धि के लिए माँगता है और कैसे प्रभु उसकी सुना और कैसे वह उसे आशिषित करता है जैसे दिया गया है **२** इतिहास **१:१०–१२** में – अतः अब मुझे बुद्धि और ज्ञान प्रदान कर कि मैं इस प्रजा की अगुवाई करूं, क्योंकि तेरी इस महान जाति पर कौन शासन कर सकता है?" और परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, "इसलिए कि तेरे मन में यह बात थी और तू ने न तो धन, न सम्पत्ति, न सम्मान, न बैरियों के प्राण और न ही अपने लिए दीर्घायु मांगी है, परन्तु तू ने अपने लिए बुद्धि और ज्ञान मांगा है कि मेरे लोगों का जिन पर मैंने तुझे राजा नियुक्त किया है, शासन कर सके। तुझे बुद्धि और ज्ञान दिया जाता है। और मैं तुझे इतना धन, सम्पत्ति और सम्मान दूंगा, जितना न तो तुझ से पहले किसी राजा को मिला और न ही तेरे बाद किसी राजा को मिलेगा।" सुलैमान ने प्रभु से बुद्धि माँगा लेकिन प्रभु ने उसे एश्वर्य, धन, सम्मान और सामर्थ भी दिया। अगर हम प्रभु से प्यार करते हैं तो हम धैर्य से हमारी माँगों को उसके सामने रख सकते हैं। यह ज़रूरी है कि प्रभु हमसे प्यार करे ताकि हमारी माँगों को जवाब मिल सके। हमे हमारा जीवन उसके इच्छा अनुसार जीना है तब वह हमसे प्यार करेगा। प्रभु ने लोगों से बहुत प्यार किया और इसी कारण उसने उसके एक मात्र पुत्र को इस संसार में भेजा। सुलैमान ने प्रभु से बुद्धि के लिए पूछा कि वह प्रभु के लोगों पर राज कर सके। प्रभु इस

बात से प्रसन्न हुआ और प्रभु ने उसे बहुत आशिषित किया, उसके पहले और उसके बाद के राजाओं से भी अधिक आशिषित किया। प्रभु की उपस्थिति उसके जीवन में भरने लगा। हमारे रोज के जीवन में, हमारी प्रार्थना जैसे हम जीते हैं, हमारी बातें, सब कुछ परमेश्वर के हृदय को प्रसन्न करना चाहिए। प्रभु को हमारे जीवनों में अच्छाई दिखना चाहिए हमरी स्तुति में प्रार्थनाओं में और हमारी सेवा जो दूसरों के लिए है उसमें सुलैमान परमेश्वर द्वारा अत्याधिक आशिषित था, ऐसे आशीष से जो किसी राजा ने न उसके पहले और न उसके बाद पाया। हम देखते हैं दाऊद के जीवन में जो एक चरवाहा था, प्रभु ने उसे कैसे बुद्धि से आशिषित किया जैसे दिया गया हैं १ शमूएल १८:३० में – फिर पलिश्तियों के सेनापति युद्ध के लिए पुनः निकल आए, और ऐसा हुआ कि जब जब वे निकल आते तब तब दाऊद शाऊल के अन्य कर्मचारियों से बढकर बुद्धिमानी से आचरण करता था। अतः उसका नाम अत्याधिक सम्मानित हो गया।

जैसे दाऊद में बुद्धि था उसका नाम दूसरों से अधिक ऊँचा उठाया गया और सब उसके बारे में जानते थे। हम पढ़ते है १ शमूएल १८:१४–१६ में – दाऊद अपने सब कामों में अत्याधिक सफ़ल होता जाता था क्योंकि यहोवा उसके साथ था। जब शाऊल ने देखा कि दाऊद बहुत सफ़ल होता जाता है तब वह उससे बहुत भयभीत रहने लगा। परन्तु सब इस्राएल और यहूदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम करते थे, और वह युद्ध में उनकी अगुवाई करता था।

जब हमारे पास बुद्धि और ज्ञान होता है जो प्रभु के द्ववारा हमारे जीवनों में दिया गया है तो हम लोगों के बीच जाने–पहँचाने जाएंगे। राजा भी दाऊद का भय मानता था क्योंकि उसके पास प्रभु द्वारा दिया हुआ बुद्धि था।

आज भी अगर हम में यह बुद्धि है तो हम जाने–पहँचाने लोग हो सकते हैं। हमारे जीवन में हम एक सम्मानित व्यक्ति बन सकते हैं और एक आशीष का पात्र बन सकते हैं। जैसे कि वचन कहता है अगर हम यह बुद्धि की घटी में हैं तो फिर हम परमेश्वर से पूछ सकते हैं और वह हमारे जीवनों की इस घटी को येशु मसीह के नाम से पूरा कर सकता है। हम में सामर्थ होगा जब परमेश्वर कि आत्मा हम पर आती है। हम केवल यरूशलेम और यहूदिया में ही नहीं बल्कि दुनिया के कोनों में जाने पहचाने जाएंगे, जब हम इस बुद्धि को परमेश्वर से प्राप्त करते हैं।

हम पढ़ते है नीतिवचन १:२–३ में – जिनसे बुद्धि और शिक्षा प्राप्त हो, समझ की बातों की पहचान हो, व्यवहार में प्रवीणता, धार्मिकता, न्याय, और निष्पक्षता के लिए शिक्षा प्राप्त हो;

हम इस बुद्धि और ज्ञान को परमेश्वर के वचन के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। वचन को बार बार पढ़कर और वचन पर विश्वास रखकर हम बुद्धि, न्याय और निर्णय और समानता पा सकते हैं। अगर हमारे जीवनों में और हमारे हृदय में वचन नहीं है तो यह सारे अच्छे गुण हमारे जीवन में नहीं होगा। यें वचन सुलैमान द्वारा लिखा गया राजा के रूप में उसके राज के कई वर्षों के बाद।

हम देखते हैं कि कैसे पौरानिक कालों केसेवकों ने बुद्धि के लिए प्रार्थना किया। मूसा ने बुद्धि के लिए प्रार्थना किया जैसे दिया गया है भजन संहिता ९०:१२ में – अतः हमको अपने दिन गिनना सिखा, कि हम बुद्धि से भरा मन पाएं।

केवल प्रभु हमे बुद्धि और ज्ञान दे सकता है। विश्वासियों सा हमे प्रभु ने बुद्धि और ज्ञान के लिए हमे हमारे जीवनों में प्रार्थना करना चाहिए। प्रभु का कार्य करने के लिए, सेवा चलाने में और वृद्धाश्रम चलाने में, परमेश्वर का वचन तुम सबके लिए लाने में, मेरे पास कुछ भी बुद्धि नहीं है लेकिन परमेश्वर कि बुद्धि सम्पूर्ण है। हर व्यक्ति दफतर में काम करता है उसे परमेश्वर कि बुद्धि कि ज़रूरत है, नहीं तो कोई भी कार्य नहीं होगा। इसलिए हमे परमेश्वर कि बुद्धि कि ज़रूरत है हमारे जीवनों में। हम पढ़ते है भजन संहिता ११९:६६ में – मुझे भला विवेक और ज्ञान दे, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर विश्वास करता हूं। दाऊद ने परमेश्वर से प्रार्थना किया कि वह उसे निर्णय और ज्ञान दें, जैसे वह उसके वाचाओं पर विश्वास करता था। प्रभु ने दाऊद कि माँग पूरी की। दानिय्येल ने भी परमेश्वर से बुद्धि माँगा और प्रभु ने उत्तर दिया जैसे कहा गया है दानिय्येल १०:१२ में – तब उसने मुझ से कहा, "हे दानिय्येल मत डर, क्योंकि पहले ही दिन जब तू ने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन करके समझने–बूझने के लिए मन लगाया, तेरे वचन सुन लिए गए और तेरे वचनों के कारण ही मैं आया हूं।

मूसा ने बुद्धि माँगी प्रभु से क्योंकि वह जानता था कि उसकी बुद्धि तो कुछ भी नहीं। अगर परमेश्वर उसके साथ न रहता तो उसका सामर्थ और बल बेकार था। दाऊद ने प्रभु से पूछा और प्रभु ने उसे बुद्धि दिया। प्रभु ने दानिय्येल से बात किया यह कहते हुए कि वह नहीं डरे। जब से दानिय्येल ने परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन बनाया, परमेश्वर की महानता की साक्षी दी और उसके असहाय परिस्थिति के बारे में कहा उसी

दिन से परमेश्वर ने उसके प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। हमारे खुद के बुद्धि और सामर्थ से हम हमारे जीवनों में कुछ नहीं कर सकते हैं। हम मिट्टी के बने हैं और जब जीवन का श्वास जो परमेश्वर का दिया हुआ है लिया जाता है तो हमारा शरीर दुर्गंध देता है। प्रभु के बिना, उसके आशीष और ज्ञान के बिना हम मृतक हैं। हमारा जीवन दुर्गंध देगा, हमारा घर दुर्गंध देगा और हर जगह बुरा दुर्गंध है। अगर प्रभु हमारे साथ हैं तो उसकी बुद्धि, और ज्ञान हमे और हमारे घरों को इस संसार में उजाला कर देगा। हम आशिषित होंगे और बडे लोगों के सामने खड़े होंगे और हमारा नाम सारे संसार में जाना जाएगा। परमेश्वर हमे ऐसा अद्‌भुत बुद्धि देगा। जैसे दानिय्येल ने अपने आप को परमेश्वर के सामने दीन बनाया और स्वर्गदूत उसे बुद्धि, ज्ञान और शक्ति देने आया । जो कोई भी परमेश्वर के सामने अपने आप को दीन करेगा, उसकी प्रार्थना परमेश्वर द्वारा सुनी जाएगी। हमे हमारे विश्वास में आगे बढ़ना हैं। जैसे ही परमेश्वर की कलिसीया का विश्वास कम हो रहा था याकूब उनके लिए दुख से प्रार्थना कर रहा था। हम पढ़ते हैं याकूब **१:४** में – पर धीरज को अपना पूरा कार्य करने दो कि तुम पूर्ण तथा सिद्ध हो जाओ, जिससे कि तुम में किसी बात की कमी न रहे। याकूब दुख से प्रार्थना करता लोगों के लिए क्योंकि उनका विश्वास घट रहा था और उसने लोगों से कहा कि उन्हें किसी भी चीज़ की घटी नहीं होनी चाहिए। वे परिपूर्ण और संपूर्ण रीति से प्रभु पर निर्भर होना चाहिए। हमारे जीवनों में विश्वास द्वारा हम प्रभु से सबकुछ पा सकते हैं। यहोशू ने एक महान कार्य किया प्रभु पर विश्वास करके जैसे दिया गया है यहोशू **१०:१२–१४** में – उस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया । इसलिए यहोशू ने इस्राएलियों के सामने यहोवा से कहा, "हे सूर्य, गिबोन पर और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई पर ठहर जा।" और सूर्य उस समय तक थमा रहा, और चन्द्रमा ठहरा रहा जब तक कि उस जाति ने अपने शत्रुओं से बदला न ले लिया। क्या यह बात याशार नामक पुस्तक में नहीं लिखी है? उस दिन तो सूर्य आकाशमण्डल के मध्य थम गया और लगभग पूरे दिन ठहरा रहा। न तो उस दिन के पूर्व न उस दिन के पश्चात कोई ऐसा दिन हुआ जिसमें यहोवा ने किसी मनुष्य की ऐसी सुनी हो, क्योंकि यहोवा इस्राएल की ओर से लड़ा। यहोशू के हृदय में महान विश्वास था। जैसे ही उसने विश्वास में बात किया सूर्य और चंद्र ठहर गया। इस चमत्कार का कारण यहोशू का विश्वास था। हम पढ़ते हैं विश्वास के बारे में इब्रानियों **११:३३–३४** में – जिन्होंने विश्वास ही से राज्य जीते, धार्मिकता के कार्य किए, प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएं प्राप्त कीं, सिंहों के मुंह बन्द किए, आग की ज्वाला को शान्त किया, तलवार की धार से बच निकले, निर्बलता में बलवान किए गए, युद्ध में वीरता दिखाई, विदेशी सेना को मार भगाया।

प्रभु हमारी सारी घटी को पूरा करेगा। प्रभु ने चेलों को चुना और उन से बात की जैसे लिखा गया है मत्ती **१०:१** – तब येशु ने अपने बारह चेलों को बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बिमारी तथा सब प्रकार की दुर्बलता को चंगा करें।

प्रभु ने बारह चेलों को चुना और उन्हें सामर्थ और अधिकार दिया। आज हमे जानना हैं कि यह संभव है कि प्रभु से सारी वस्तुओं को प्राप्त किया जा सकता है। प्रभु के बिना हमारा जीवन बेमतलब है। प्रभु सारी घटी को भर सकता है और हमारी जीवनों की घटी को भी भर सकता है और यह केवल उसी के द्वारा है कि हम अपने आशीषों को पा सकते हैं। आज भी प्रभु हमसे हर दिन उसके आत्मा के द्वारा बात करता है।

प्रभु ने उसके चेलों से कहा कि वह उसके पिता के घर जा रहा है कि वह सहायक को उनके पास भे सके। वह सहायक आज पवित्र आत्मा है। अगर हम सुनेंगे कि आत्मा क्या कहता है तो हम आशिषित होंगे। आज, प्रभु हमसे उसके वचन द्वारा बात करता है। अगर हम हमारे जीवनों में किसी चीज़ कि कमी महसूस करते हैं तो हमें पिता से माँगना हैं और वह हमारी उस ज़रूरत को येशु मसीह के नाम से पूरा करेगा।

––पास्टर सरोजा म.